

1, 17. 6, 54, 7. VS. 16, 10. पिशाचास्तस्मान्नश्यति यमहे ग्राममाविशे AV. 4, 36, 7. 2, 14, 5. 6. 5, 13, 2. 6, 83, 3. 7, 115, 1. CAT. Br. 9, 2, 2, 19. 12, 4, 2, 3. 13, 3, 2, 6. AT. Br. 3, 28. यदि कपालं नश्येत् 7, 9. TS. 2, 6, 2, 5. ÇĀṆKH. Çr. 13, 3, 2. GṆJ. 5, 8. प्रज्ञा नश्यति M. 4, 52. धर्मो ऽनशत्तदा MBh. 13, 1313. 3, 8494. ततो नश्यति ते धर्मः KATHĀS. 15, 78. ज्ञानानि न-  
इति (नश्यति zu lesen) MBh. 12, 1860. महान्धर्मो नशिष्यति 4, 680. न-  
ष्टो मोक्षः BHAG. 18, 73. नष्टसंज्ञ MBh. 1, 3147. 3, 2867. नष्टात्मन् 2361.  
० वृष 2904. ० चेतन Suçr. 1, 235, 9. ० स्वरता 118, 8. ० मति, ० दृष्टि BHAG.  
P. 5, 26, 9. ० धी RĪĀ-Tab. 5, 299. ० संस्माति BHATT. 6, 58. ० निद्र PĀNĀT.  
38, 4. ननाशैकपदे रोषः R. 6, 72, 69. नश्यति कृष्यकव्यानि नराणामवि-  
ज्ञानताम् so v. a. zu Nichts werden, keinen Erfolg haben, ohne Nutzen  
sein, vergeblich sein M. 3, 97. नष्टं देवलोके दत्तम् 180. तपोसि मम नष्टा-  
नि व्रतानि मे ऽखिलानि च BRAHMA-P. in LA. 58, 7. श्रववेकिं भूपाले  
नश्यति गुणिनो गुणाः । प्रवासरासके कास्ति यथा साध्याः स्तनोवतिः ॥  
umsonst da sein Spr. 254. कृतं यस्मिन्न नश्यति dem eine Wohlthat nicht  
vergebens erwiesen worden ist MBh. 1, 6116. नश्यतीषुर्व्याविद्धः खे वि-  
द्धमनुविध्यतः । तथा नश्यति वै तिप्रं वीजं परपरिग्रहे ॥ M. 9, 43. असंतुष्टा  
द्विजा नष्टाः संतुष्टा इव पार्थिवाः sind verloren so v. a. bringen es zu Nichts  
Spr. 277. तिप्रं नश्यति साम्बयः geht zu Grunde M. 3, 205, 9, 314. प्रेत्य चेह  
च नश्यति 8, 111, 171. MBh. 3, 1093. PĀNĀT. 47, 15. प्राणेषु नश्यत्सु (so ist  
zu lesen) BHATT. 2, 22. जीवनाशं ननाश च BHATT. 14, 31. प्रकीर्ता यदि नष्टः  
(Schol. = मृतः) स्यात् M. 8, 166. बह्वो ऽविनयावृष्टा राजानः सपरिच्छदाः  
7, 40. PRAB. 52, 1. अनावृष्टा कृषिर्नष्टा DHŪRTAS. 76, 18. VARĀH. BRH. S. 17,  
19. नष्टं verdorben, beschädigt JĀG. 2, 59. नष्टं im Gegens. zu पुष्ट von Per-  
sonen VEDĀNTAS. (Allah.) No. 81. med.: श्रूयै नशत् सनिषत् नो धियैः RV. 9,  
79, 1. नशेमहि सदा निशि verschwinden, sich unsichtbar machen MBh. 7,  
685. अयसर्पत नश्यधम् verschwindet, macht dass ihr fort kommt R. 5, 27, 24.  
(अश्रुं कर्म) तत्सर्वं नश्यते तत्र स्नातमात्रस्य MBh. 3, 7014. 7069. 13245.  
न चास्या नश्यते वृषम् N. 17, 7. स नश्यते मृषा वदन् zu Grunde gehen  
MBh. 1, 3414. 3, 10701. यावन्न नङ्ग्यामहे BHAG. P. 4, 17, 11.

— caus. नाशयति, अनीनशत्: verschwinden machen, vertreiben; ver-  
tügen, zerstören, zu Grunde richten: लेत्रियं नाशयामि त्वत् AV. 3, 7, 6.  
4, 37, 11. 5, 4, 1. आर्हि ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु 6, 113, 1. लक्ष्मं श्वेतमनी-  
नशम् 1, 23, 4. शीर्षो रोगमनीनशम् 9, 8, 21. 8, 7, 3. RV. 1, 30, 11. रथमना-  
शयत् verschwinden machen so v. a. weit weg führen BHATT. 17, 102. ना-  
शयाम्यद्य गाधेयं नीकारमिव भास्करः R. 1, 55, 25. 54, 18. 19. अज्ञानं तमः  
BHAG. 10, 11. क्षामम् MBh. 3, 2324. अमम् 2387. 3080. 4, 201. 5, 6051. R.  
5, 3, 71. BHAG. 5, 16. BHATT. 8, 57. प्रभूतमपि दारिद्र्यं न नाशयति PĀNĀT.  
241, 12. नाशयाम्यद्य ते दर्पम् R. 1, 56, 3. नाशयत्याशु पापानि M. 11, 245.  
अपूजितं तु तद्भक्तमुभयं नाशयेद्विदम् (बलमूर्धं च) 2, 55. मा धर्म्यानीनशः प-  
थः R. GORR. 1, 24, 9. MBh. 3, 2027. शाणितैर्वलिकर्माणि R. 3, 1, 24. 5, 2,  
21. परकार्यम् PĀNĀT. 1, 407. तैर्नाशिते वने R. 5, 63, 8. तन्नाशयथ किं ग्रा-  
मान् VId. 66. कथमग्निं नो धत्तेत्यकथमाबुर्न नाशयेत् MBh. 1, 8882. आ  
पाप स्वयं नष्टः परानपि नाशयितुमिच्छति PRAB. 52, 1. MĀRK. P. 14, 76.  
Hit. IV, 92. BHAG. P. 7, 10, 54. 9, 15, 15. न स्वल्पस्य कृते भूरि नाशयेन्म-  
तिमान्नरः verlieren, einbüßen PĀNĀT. 1, 23. नाशितं verloren, eingeblüßt  
JĀG. 2, 20. उपदिष्टं सुसूक्तमर्थं शास्त्रं यत्नेन धीमता । स नाशयतु दुष्टा-  
त्मा so v. a. wieder vergessen R. 2, 75, 26. श्रुतं नाशयताम् verloren ge-

hen lassen, nicht im Gedächtniss behalten MBh. 7, 705. अग्नीन् die Feuer  
ausgehen lassen BHAG. P. 4, 5, 15. कन्याम् ein Mädchen schänden KULL.  
zu M. 8, 367. fgg. DAÇAK. in BRNF. Chr. 191, 10. Nach P. 1, 3, 86 und Vop.  
22, 2 stets act.; das med. haben wir in den folgenden Stellen: शोको  
नाशयते धैर्यं शोको नाशयते श्रुतम् । शोको नाशयते सर्वम् R. 2, 62, 15. M.  
3, 175. दातुर्नाशयते फलम् 177. कृतं पुरुषकारं हि देवं नाशयते तणात्  
HARIV. 10087. 1167. नाशयते चित्तम् VĀJU-P. in Verz. d. Oxf. H. 50, b,  
26. Der aor. in der Bed. des simpl.: मा व्याघ्रा नीनशुर्वनात् verschwin-  
den aus MBh. 3, 862; vgl. u. वि.

— desid. निनशिष्यति und निनइति P. 7, 1, 60. 2, 45; s. निनङ्कु.

— श्रुनु s. श्रुनुनाश.

— अय sich scheren, sich packen: अयनाशय धिक्ता जाल्मास्तु ÇĀṆKH.  
Br. 30, 5.

— व्यप caus. vertreiben: यस्ते युद्धमयं दर्पं कामं च व्यपनाशयेत् MBh.  
3, 7090.

— अय verschwinden, vergehen: अयनेशुः कुत्राणां हि वीर्याण्यनुनजाइ-  
यात् MBh. 4, 1728.

— निस्, partic. निर्नष्ट (das n unverändert, weil श in ष übergegan-  
gen ist) verloren gegangen, verschwunden: ० नामकृत्य (मकीपाल) RĪĀ-  
TAB. 1, 83. ० काटककुल 6, 367. — caus. austreiben, vertreiben: निष्क्र-  
व्यादमनीनशम् RV. 10, 162, 2. AV. 1, 23, 2. 3.

— परि, परिणश्यति, परिनष्ट P. 8, 4, 36, Sch.

— प्र (das n der Wurzel bleibt unverändert, wenn श in ष sich  
wandelt P. 8, 4, 36. wenn श verschwindet [also auch प्रनश्यति] VArtt.  
Vop. 11, 5) verloren gehen, sich verlieren, verschwinden: या प्रेव नश्य-  
ति RV. 10, 146, 1. परागु कैवैतद्रेतः सितं प्रणश्येत् CAT. Br. 4, 3, 2, 4, 4,  
20. 22. 1, 6, 4, 17. आधिः प्रणश्येद्विगुणे धने यदि न मोच्यते JĀG. 2, 58.  
M. 8, 149. न ते यशः प्रणशिता MBh. 1, 3278. न मे कीर्तिः प्रणश्येत 3,  
16945. शैत्यं सोमात्प्रणश्येत 2, 2548. कुलनये प्रणश्यति कुलधर्माः BHAG.  
1, 40. तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति 6, 30. PĀNĀT. 129, 18.  
20. विव्युत्प्रणाशं स वरं प्रनष्टः BHATT. 3, 14. प्राणशनासिकाभ्यां च वक्त्रे-  
ण च वनोक्तसः verschwinden so v. a. machten sich davon, entwischten  
15, 49. प्रनष्टम् 54. partic. प्रनष्ट (häufig fälschlich प्रणष्ट geschrieben)  
verloren gegangen, verloren, geschwunden, verschwunden, nicht zu se-  
hen, dahingegangen M. 8, 30. 33. 34. JĀG. 2, 33. MBh. 1, 4359. 7673. 3,  
2967. 8735. 13, 2611. BHAG. 18, 72. R. 1, 20, 17. 61, 6. 7. 2, 33, 20. 75, 45.  
4, 27, 9. 5, 15, 37. 71, 7. VARĀH. BRH. S. 78, 23 = 93, 3. KATHĀS. 4, 25. RĪ-  
Ā-Tab. 5, 211. der sich aus dem Stawbe gemacht hat PĀNĀT. 89, 20. Vet.  
in LA. 22, 11. — caus. verschwinden machen: ह्यायामिव प्र तान्सूर्यः प-  
रिक्रामन्नीनशत् AV. 8, 6, 8. गाणडीवशब्देन प्रणश्य तत्र वै बलम् MBh.  
7, 327. HARIV. 8877. पाप्मानं मे प्रणाशय BHAG. P. 8, 16, 27. vergehen  
machen: यज्ञमानम् CAT. Br. 5, 2, 2, 20. verloren gehen lassen so v. a. un-  
belohnt lassen: कृतकृत्यस्य भृत्यस्य कृतं नैव प्रणाशयेत् Hit. IV, 9.

— अतिप्र einer Sache (acc.) verlustig gehen: नेदिमो लोकानतिप्रणा-  
श्यानि CAT. Br. 6, 7, 2, 16. 4, 11. 9, 4, 4, 11.

— विप्र sich verlieren, verschwinden: पापानि विप्रनश्यति MBh. 3,  
5027. JĀG. 3, 398. ब्राह्मणेषु प्रमूढेषु धर्मो विप्रणशेद्भुवम् MBh. 13, 3083.  
स्मृतिर्मे विप्रणश्यति 13, 825. अपि अपाके श्रुति वा न दानं विप्रणश्यति